RNI No. : UTTHIN/2011/36646

वर्ष : 1 अंक : 9 मूल्य : ₹25 मई, 2024

अतुल्य उत्तराखंड

बदलाव की उड़ान

RNI No. : UTTHIN/2011/36646

अतुल्य उत्तराखंड

मई, 2024

वर्ष : 1 अंक : 9

संपादक : अर्जुन एस. रावत
प्रबंध निदेशक : पूजा रावत
डिजाइन : सीमा रावत
फोटो : दिवाकर नेगी

SMP Media Network Pvt. Ltd.
पंजीकृत कार्यालय : ई-27, नेहरू कॉलोनी
देहरादून, उत्तराखंड
फोन : 9897713733
email:
office@smpmedianetwork.com
smpmedianetwork@gmail.com

एसएमपी मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवम प्रकाशक अर्जुन सिंह रावत द्वारा ई–27, नेहरू कॉलोनी, धर्मपुर, देहरादून , उत्तराखंड से प्रकाशित तथा आईशा प्रिंटिंग प्रेस, 292, चुक्खूवाला, ब्लॉक–1, नियर पीएनटी कॉलोनी, देहरादून से मुद्रित।

इस अंक में

06 **बदलाव की उड़ान**

बदलाव प्रकृति का नियम है। कहीं भी, कभी भी बदलाव लाया जा सकता है। जरूरत सिर्फ इस बात की होती है कि कोशिश सही दिशा में की जाए। संसाधनों का सही इस्तेमाल हो, लोगों को सही गाइडेंस मिले और प्रयास मिलकर किया जाए।

14 सेलंग... कमाल, मिसाल गांव

20 मशरूम की 5 नई प्रजातियों ने जगाई मेडिकल सेक्टर में उम्मीद

24 बिच्छू घास से किस्मत बदलने की आस!

28 एक भक्त ऐसा भी! गुजरात से पैदल चार धाम

32 'बदनाम' पिरूल बन सकता है समृद्धि का आधार

36 कालिंका मां... खुद बताती है मनोकामना

38 ...ऊंचे पहाड़ों में कम हाइट बन रही समस्या

पहाड़ों में बदलाव की आहट और महिलाएं

संसाधनों का सही इस्तेमाल, सही गाइडेंस और सामूहिक प्रयास। बदलाव लाने के लिए यही तो चाहिए। उत्तराखंड के गांवों में धीरे-धीरे ही सही लेकिन बदलाव की बयार दिखने लगी है। ये प्रयास लोगों की अपनी मेहनत, सोच और पहाड़ में ही रहकर कुछ करने की चाहत के कारण नजर आ रहा है। आज पहाड़ की महिलाएं परंपरागत साधनों के साथ-साथ आजीविका के नए तौर-तरीकों को अपनाने में हिचक नहीं रही हैं। चौखुटिया में अगर महिलाएं फुटवियर डिजाइन कर रही हैं, तो नैनीताल की महिलाओं ने एलईडी लाइट्स पर काम करना शुरू किया है। कहीं महिलाएं बिच्छू घास से रोजगार के नए तरीके खोज रही हैं तो कहीं महिलाओं ने पिरूल को अपनी आजीविका का साधन बना लिया है। ये पहाड़ की छोटी-छोटी लेकिन बदलाव की बड़ी कहानियां हैं।

- संपादक

महिलाओं को यहां पर काम करना अच्छा लगता है। हमारी जो आजीविका होती है, उससे हमारा घर-परिवार चलता है। हम एक कदम आगे चले हैं और हम चाहते हैं कि इससे भी बेहतर करें। सबसे अच्छी बात है कि हमारा लोकल प्रोडक्ट है। आजकल कहा जा रहा है कि लोकल का प्रोडक्ट लोकल में ही चले। हम इस पर काम करते हैं और हमारे समाज के लोगों को भी अब लगता है कि ये छोटा कामधंधा नहीं है, ये बहुत अच्छा काम है। 25 महिलाएं पास-पड़ोस से यहां चप्पलें बनाने आती हैं।

- कमला बिष्ट, चौखुटिया, अल्मोड़ा

कराई। उनको एग्जिस्टिंग यूनिट दिखाई गई, जिससे वो देखकर सीख पाएं। फ्लेक्सिबल वर्किंग आवर के हिसाब से वो दो घंटे-तीन घंटे यूनिट में काम करके जो भी चप्पलें बना रही हैं, उन्हें लोकल मार्केट में सेल करके अच्छी आजीविका कमा रही हैं।

महिलाओं ने जब आजीविका के साधनों से जुड़ना शुरू किया तो पहले पारंपरिक कामों को प्राथमिकता दी, फिर वो चाहे ऐपण में नए प्रयोग हों या फूड प्रोसेसिंग से जुड़ी पहलें। लेकिन अब बात इससे आगे पहुंच गई हैं, वो अपनी स्किल को लगातार बढ़ा रही हैं। अगर चौखुटिया में महिलाओं ने फुटवियर बनाने में दिलचस्पी दिखाई तो हल्द्वानी के आसपास के इलाकों में कई महिलाओं ने एलईडी बल्ब, झालर बनाना सीखा। अब वो न सिर्फ आत्मनिर्भर बन रही हैं, मेक इन इंडिया में भी योगदान दे रही हैं।

डीडीएम नैनीताल मुकेश बेलवाल के मुताबिक, आजीविका

गिरीश चंद्र पंत
डीडीएम, अल्मोड़ा

मुकेश बेलवाल
डीडीएम, नैनीताल

राजीव प्रियदर्शी
डीडीएम, यूएस नगर

यहां हमने बहुत अच्छे से सीखा कि फुटवियर कैसे बनाते हैं। हम इनको बेचते भी हैं। हमको इसकी काफी जानकारी हो गई है। अब हमें बैंकों की जानकारी भी हो गई है, पहले हमें बैंक जाने में डर लगता था कि बैंक कैसा होगा, वहां क्या होगा। आज हम बैंकों में जाते हैं, अपना काम खुद करके आते हैं जैसे पैसे निकालना, डालना, पासबुक में एंट्री कराना। हम इसके बारे में सबकुछ जान गए हैं। यहां आके हम चप्पल भी बनाते हैं, हमें अच्छा लगता है।

- दीपा गोस्वामी, चौखुटिया, अल्मोड़ा

पेज-40 RNI No. : UTTHIN/2011/36646

teerandaj.com

पहाड़ों से पहाड़ों की बात